छत्तीसगढ़ी ग़ज़ल

पाठ 4.3 : नँदिया–नरवा मा तँउरत हे

मुकुंद कौशल

C85ZFQ

मुकुन्द कौशल *का जन्म 7 नवम्बर सन् 1947 को दुर्ग नगर में हुआ। कौशल जी, हिंदी और छत्तीसगढ़ी के कुशल कवि एवं सुपरिचित गीतकार हैं। उन्होंने छत्तीसगढ़ी ग़ज़लों को एक नई पहचान दी। उनकी प्रमुख प्रकाशित रचनाएँ* ***भिनसार*** *(छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह),* ***लालटेन जलने दो*** *(हिंदी काव्य संग्रह),* ***हमर भुइयाँ हमर अगास*** *(छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह)* ***मोर ग़ज़ल के उड़त परेवा*** *(छत्तीसगढ़ी ग़ज़ल संग्रह),* ***केंरवस*** *(छत्तीसगढ़ी उपन्यास) हैं।*

नँदिया–नरवा मा तँउरत हे, मनखे के बिसवास इहाँ।
पथरा–पथरा मा लिक्खे हे, भुइयाँ के इतिहास इहाँ।।

तीपत भोंभरा, बरसत पानी के हम्मन टकराहा हन,
लइका मन सँग खुड़ुवा खेलत रहिथे बारामास इहाँ।

पूस–माघ मा जाड़ जनावै, अँगरा कस बइसाख तपै,
बइहा होके धमसा कूदै सावन मा चउमास इहाँ।

ये भुईयां के बात अलग हे, काए बतावौं गुन येकर,
बोहे रहिथें नान्हे–नान्हे, लइका मनन अगास इहाँ।

पीरा फीजे जिनगानी के, धुरघपटे अँधियारी मा,
हितवाई के दीया करथे, अंतस मा परकास इहाँ।

ये ममियारो राम–लखन के, बानासुर के राज इही,
राम लखन–सीता आइन हें, पहुना बन के खास इहाँ।

हर चौका ले कोन्टा तक मा, माढ़े हें देवता धामी,
'कौसल' इहँचे गंगा मैया, अउ पाबे कैलास इहाँ।

टिप्पणी

बाणासुर : पुराणों के अनुसार असुरराज बाणासुर बलि वैरोचन के सौ पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र था, जो पाताललोक का राजा था। शोणितपुर अथवा लोहितपुर उसकी राजधानी थी। कृष्ण के साथ बाणासुर का युद्ध हुआ था जिसमें कृष्ण ने बाणासुर के सहस्त्र हाथों में से दो को छोड़कर शेष काट डाले थे। उसे महाबलि सहस्त्रबाहु तथा भूतराज भी कहा जाता था।

शब्दार्थ

नरवा – नाला; **तँउरत हे** – तैर रहा है; **पथरा** – पत्थर; **भुइयाँ** – जमीन; **भोंभरा** – सूर्य के ताप से गर्म धूल; **टकराहा** – आदी, अभ्यस्त; **खुडुवा** – कबड्डी के समान एक खेल; **नान्हे–नान्हे** – छोटे–छोटे; **फींजे** – भीगा हुआ; **माढ़े हे** – रखे है; **पहुना** – मेहमान; **अगास** – आकाश, आसमान; **धुरघपटे** – अत्यंत घना।

अभ्यास

पाठ से

निर्देश : हिंदी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में तथा छत्तीसगढ़ी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी मातृभाषा में लिखिए।

1. ''नँदिया–नरवा मा तँउरत हे, मनखे के बिसवास इहाँ'' इस पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।
2. ''तीपत भोंभरा बरसत पानी के हम्मन टकराहा हन'' में छत्तीसगढ़ के लोगों की कौन–सी विशेषता को दर्शाया गया है?
3. ''लइका मन अगास ला बोहे रहिथे'' के का मतलब हे?
4. कवि हर छत्तीसगढ़ ल राम–लखन के ममियारो कोन अधार म केहे हे?

पाठ से आगे

C8EVHD

1. छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए।
2. छत्तीसगढ़ में कुछ ऐसे स्थल हैं, जो देवस्थलों के रूप में जाने जाते हैं। अपने गाँव के किसी एक देवस्थल के संबंध में अपनी धारणाएँ लिखिए।
3. विपरीत परिस्थितियों में भी यहाँ के निवासियों का हृदय किन मानवीय गुणों से परिपूर्ण रहता है?
4. अपने क्षेत्र में खेले जाने वाले कुछ पारंपरिक खेलों के संबंध में आपको जानकारी होगी। उन खेलों के संबंध में निम्नानुसार जानकारी दीजिए–

क्र. सं.	खेल का नाम	खिलाड़ियों की संख्या	खेलने के तरीके	प्रमुख विशेषताएँ

भाषा के बारे में

1. छत्तीसगढ़ी के निम्नलिखित क्रियापदों को हिंदी में लिखिए–

   जैसे ''बोहे रहिथे'' अर्थात्–धारण किया रहता है।

   (क) माढ़े हे – .....

   (ख) खेलत रहिथे – .....

   (ग) धमसा कूदै – .....

   (घ) लिक्खे हे – .....

   (ङ) तउँरत हे – .....

C8NRJ1

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ी और हिंदी में लिखी गई कुछ अन्य ग़ज़लों का संग्रह कीजिए और अपनी कक्षा में सुनाइए।
2. आपके गाँव में विराजित लोक देवी–देवताओं के नाम लिखिए।
3. अपने आस–पास के ऐतिहासिक स्थलों के बारे में अपने बड़े–बुजुर्गों से जानकारी प्राप्त कीजिए।
4. यहाँ दिए गए अन्य रचनाकारों की ग़ज़ल भी पढ़िए–

C8XMKN

छत्तीसगढ़ी गज़ल

बार के दिया संगी, अँगना मा घरके
फेंकव अँधियारी ला, झउँहा मा भरके।

अलगू अउ जुम्मन कहाँ बइठे होंहीं।
खोजत हे प्रेमचंद गाँव मा उतर के।

कारखाना चर डारिस जंगल ला भइया।
दउँरत हे खेत डहर जंगल ला चरके।

फोटुच मा बड़ सुघ्घर दिखथे समारू।
माटी के भिथिया अउ छानी खदर के।

डॉ. जीवन यदु

हिंदी गज़ल

कैसे मंजर सामने आने लगे हैं,
गाते–गाते लोग चिल्लाने लगे हैं।

अब तो इस तालाब का पानी बदल दो,
ये कँवल के फूल कुम्हलाने लगे हैं।

वो सलीबों के करीब आए तो हमको
कायदे–कानून समझाने लगे हैं।

एक क़ब्रिस्तान में घर मिल रहा है
जिसमें तहख़ानों में तहख़ाने लगे हैं।

दुष्यन्त कुमार

शब्दार्थ

सलीब – सूली मंजर – दृश्य

●●●